



आमने-सामने-1

डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

रूस यूक्रेन युद्ध 2022



इस किताब में क्या है?



डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

जन्म - 10 जनवरी, 1949

हिंदी के सुपरिचित लेखक, भाषाविद, संपादक और अनुवादक। कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए., एलएल.बी., बी.एड. और पीएच.डी. की उपाधि। एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता से दो वर्षों के लिए फेलोशिप, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से चार वर्षों के लिए फेलोशिप। सितंबर 1977 से अप्रैल 1981 तक भवानीपुर एडुकेशन सोसाइटी कॉलेज में प्राध्यापन, यूको बैंक के प्रशिक्षण कॉलेज में प्राध्यापन तथा प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग में मुख्य अधिकारी के रूप में कार्य। अब सेवानिवृत्त।

लेखन/संपादन - हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, अंग्रेजी-हिंदी-बांग्ला त्रिभाषा कोश, वाग्धारा, हिंदी का भविष्य, बृहत श्लोक संग्रह, वाक्-योग-अध्यात्म तत्त्व चिंतन, जैन तत्त्व विवेचन, पावन प्रणति, प्रेरणा (स्मृति ग्रंथ), समकालीन सृजन नामक प्रतिष्ठित पत्रिका में संपादन-सहयोग। बैंकिंग का सामान्य परिचय तथा बैंकिंग के नए आयाम नामक पुस्तकों में लेखकीय सहयोग।

प्रमुख अनुवाद कार्य- विजन 2020 (ए.पी.जे. अब्दुल कलाम), श्रीमद् भगवद्गीता की भूमिका (एडुलक्स हकसले), विकास और स्वतंत्रता (अमर्त्य सेन), वैश्विक संकट (एडवर्ड सर्इद), जातीय साहित्य (आशुतोष मुखोपाध्याय), उत्तर मीमांसा (परमानंद सरस्वती), वागर्थ पत्रिका में आलेखों, कहानियों, कविताओं का अनुवाद।

संपर्क- मो. 99032 13630

ईमेल- drawadhesh10@gmail.com



मानव प्रकाशन

131 चित्तरंजन एवेन्यू
कोलकाता-700 073
Mob : 9831581479
manavprakashan5@gmail.com

Marketed by :
Kinman Services
Kolkata



1. रूस-यूक्रेन युद्ध का कारण
2. वर्चस्व के लिए लड़ता रूस
3. नाटो के प्रति रूस की खीझ
4. विश्व में फैलता हुआ नैरेटिव
5. संप्रभुता के लिए यूक्रेन का संघर्ष
6. यूक्रेन का विकास
7. रूसी आक्रमण के खिलाफ विश्व जनमत
8. भारत सहित विश्व पर युद्ध का असर
9. रूस-यूक्रेन की साझी विरासत
10. रूस-यूक्रेन पर जारों का शासन
11. रूस में क्रांति की शुरुआत
12. बोल्शेविक क्रांति
13. सोवियत संघ का निर्माण
14. सोवियत संघ का विघटन
15. दस्तावेज
16. बेचैन करते प्रश्न और संभावनाएँ।

रूस-यूक्रेन युद्ध 2022

रूस-यूक्रेन युद्ध 2022

डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह



मानव प्रकाशन
कोलकाता

ISBN : 978-93-90462-05-6

मूल्य : 100/-

© अवधेश प्रसाद सिंह

प्रथम संस्करण : 2022

मानव प्रकाशन

131, चित्तरंजन एवेन्यू,

कोलकाता 700 073

मो.-9831581479

ई-मेल-manavprakashan5@gmail.com

मुद्रक :

स्पीड प्रिंट, कोलकाता-700 001

(Rus Ukraine Yudh 2022 by Dr. Awadesh Prasad Singh)

आमुख

रूस ने 24 फरवरी, 2022 को एक विशेष सैनिक अभियान के तहत यूक्रेन पर हमला किया था। सात महीने बीत जाने के बाद भी युद्ध जारी है और क्रमशः विध्वंसक बनता जा रहा है। रूस ने यूक्रेन के एक बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया है। भारी नुकसान के बावजूद यूक्रेन हार मानने को तैयार नहीं है। हमले के समय रूस ने सोचा था कि वह शीघ्र ही यूक्रेन को आत्मसमर्पण के लिए बाध्य कर देगा और वहाँ की सरकार को अपदस्थ करके रूस के मनोनुकूल सरकार का गठन कर देगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। युद्ध की वजह से दोनों ही देश भारी नुकसान उठा रहे हैं। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 22 सितंबर 2022 तक यूक्रेन के लगभग 30,000 सैनिक मारे जा चुके थे और करीब 54,000 सैनिक घायल हो चुके थे। रूस के भी हजारों सैनिकों के मारे जाने की खबर है। संयुक्त राष्ट्र ने 5,700 नागरिकों के मारे जाने का उल्लेख किया है, लेकिन वास्तविक संख्या इससे काफी अधिक हो सकती है। रूसी बमबारी में यूक्रेन के लगभग 1,40,000 मकान ध्वस्त हो चुके हैं। करीब 35 हजार करोड़ अमेरिकी डालर की संपत्ति नष्ट हो चुकी है। यूक्रेन के राष्ट्रपति के आर्थिक सलाहकार ओलेग यूस्टेंको के 22 सितंबर 2022 के बयान के अनुसार इस युद्ध में यूक्रेन को अब तक लगभग एक लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा है।

इस युद्ध ने यूक्रेन में घोर मानवीय संकट भी पैदा किया है। यूक्रेन की आबादी के लगभग एक तिहाई लोग (लगभग 7.3 मिलियन) यूक्रेन से पलायन कर दूसरे देशों में शरणार्थी बने हुए हैं। युद्ध के कारण विस्थापित लोगों की संख्या 1.4 करोड़ के पार चली गई है। संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार रिपोर्ट में यूक्रेन के कीव, चेतनिहीव, खारकीव, सूमी आदि क्षेत्रों में रूसी सैनिकों तथा रूस-समर्थक सुरक्षा बलों पर मानवाधिकार के घोर उल्लंघन का आरोप लगाया गया है। कुछ मामलों में यूक्रेनी सैनिक भी इसके लिए जिम्मेदार पाए गए हैं।

रूस को भी इस युद्ध से काफी क्षति हुई है। रूसी अर्थव्यवस्था बुरे दौर से गुजर रही है, क्योंकि रूस के द्वारा हमला किए जाने के बाद से अमेरिका और उसके सहयोगी देशों, जैसे यूरोपीय संघ, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया सहित लगभग 50 देशों ने रूस पर आर्थिक पाबंदी लगा दी है। रूसी बैंकों पर प्रतिबंध तथा 'स्विफ्ट' भुगतान प्रणाली से वैश्विक लेन-देन से रूस को बेदखल कर दिए जाने के कारण वस्तुओं की आवाजाही तथा वित्तीय कारोवार प्रभावित हो रहा है। रूस के सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थानों के ऋणों पर रोक लगाई गई है। विभिन्न देशों द्वारा रूस को युद्ध के लिए जरूरी प्रौद्योगिकी के निर्यात रोक दिए जाने से रूस को सैन्य उपकरणों के निर्माण में दिक्कत हो रही है।

युद्ध का प्रभाव न केवल यूक्रेन और रूस पर, बल्कि पूरे विश्व पर पड़ रहा है। इस लड़ाई ने लगभग पूरी दुनिया को एक नए आर्थिक तथा भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं से जूझने के लिए मजबूर कर दिया है। अमेरिका और यूरोपीय देश भयंकर मंदी और महंगाई से जूझ रहे हैं। अमेरिका में पिछली दो तिमाहियों में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) घटा है। जीडीपी में कमी, बढ़ती महंगाई और हाल ही में फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दर बढ़ाने के कारण अमेरिका में मंदी का संकट गहराता जा रहा है। यूरोपीय देशों की स्थिति भी कमोबेश ऐसी ही है।

यूक्रेन संघर्ष के कारण विश्व में खाद्य संकट भी गहराया है और पूरी दुनिया में भुखमरी और अकाल का खतरा बढ़ा है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुतेरेस ने अपने एक बयान में कहा है कि युद्ध न केवल देश को तबाह कर रहा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी भारी नुकसान पहुँचा रहा है। 22 जुलाई, 2022 को हुए समझौते के बावजूद काला सागर बंदरगाहों से यूक्रेन के अनाज तथा रूस के खाद्य एवं उर्वरक का निर्यात का परिमाण संतोषजनक नहीं है। उन्होंने रूसी राष्ट्रपति पुतिन से इस संबंध में बात भी की है और निर्यात को बढ़ावा देने पर जोर दिया ताकि वैश्विक खाद्य संकट को दूर किया जा सके।

सवाल पैदा होता है कि रूस ने आखिर यूक्रेन पर हमला क्यों किया? क्योंकि रूस और यूक्रेन तो सदा से एक रहे हैं। उनकी साझी विरासत और इतिहास है। कीवन रस की स्थापना से लेकर सदियों तक विभिन्न आक्रांताओं के दंश को झेलने

और अंत में 20वीं सदी में जारशाही को समाप्त कर सोवियत संघ (यूएसएसआर) की स्थापना तक ये दोनों साथ थे। यही नहीं, 1991 में सोवियत संघ को भंग करने वाले बेलवेझा समझौते पर दोनों ने सहमति के साथ हस्ताक्षर किए थे और 8 दिसंबर 1991 को आजाद होने और 28 जनवरी, 1992 को संप्रभुता प्राप्त करने के बाद भी दोनों देशों में सहयोगात्मक भाव था। फिर ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी क्यों हो गए?

दरअसल विरोध का कारण यूक्रेन का पश्चिमोन्मुख रवैया तथा अमेरिका का यूक्रेन की राजनीति में हस्तक्षेप है, जो यूक्रेन का इस्तेमाल कर रूस पर नकेल कसने की कवायद करता रहा है। यूक्रेन का रूस से मुँह मोड़ना ही विवादों की जड़ है।

फिर रूस और विश्व में नए-नए नैरेटिवों ने जन्म लिया। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहना शुरू किया कि रूसी-यूक्रेनी भाई-भाई हैं, दोनों एक हैं। यूक्रेन का कभी अलग अस्तित्व नहीं रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से यूक्रेन की एक अलग राज्य के रूप में कोई परंपरा नहीं रही है। बल्कि वे यह भी कह रहे हैं कि यूक्रेन का 1991 में रूस से अलग होना ही एक ऐतिहासिक भूल थी। सदा से रूस का हिस्सा रहे यूक्रेन को बलात उससे अलग कर देना उसके अंग को काट देने जैसा था और रूस की सत्ता पर आघात था। फिर आजादी के बाद यूक्रेन का रूस से वैमनस्य पालना और पश्चिम की ओर झुकना रूस के प्रति विश्वासघात है।

पश्चिमी देश पुतिन के विचार को खारिज करते हैं। अमेरिका और यूरोप के अनेक बुद्धिजीवी एवं इतिहासज्ञ इसके विपक्ष में तर्क रखते हैं। अमेरिकी इतिहासकार टिमोथी स्नाइडर के अनुसार, पुतिन के विचार एक औपनिवेशिक सोच की उपज हैं। वे नाजी या जर्मन रवैये की याद दिलाते हैं, जिन्होंने यूक्रेनियनों पर कब्जा कर रखा था। आज फिर से उस स्वतंत्र राष्ट्र को खत्म करने की कोशिश हो रही है। यूक्रेन में राष्ट्रीय भावना का लंबा इतिहास है। उसकी अपनी संस्कृति, भाषा, साहित्य और सामाजिक-राजनीतिक विरासत है, जिसकी रक्षा के लिए वह लगातार संघर्ष करता रहा है। आजादी के बाद यूक्रेन भविष्योन्मुख है, पर इसके पड़ोसी इसे अतीत के कुछ पौराणिक विचारों की ओर ढकेलना चाहते हैं।

पुतिन के गुस्से का कारण यह भी है कि वर्तमान यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेन्स्की अधिक पश्चिमोन्मुख हैं। वे नार्थ एटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (नाटो)

का सदस्य बनना चाहते हैं। पुतिन को यह बात बिलकुल नागवार लग रही है। उन्हें लगता है कि यूक्रेन के माध्यम से पश्चिमी देश, विशेषकर अमेरिका रूस को कमजोर करना चाहता है। इसे वे कतई होने देना नहीं चाहते।

हमले के कारणों का एक तरह से खुलासा करते हुए और उसे उचित ठहराते हुए पुतिन ने उज्बेकिस्तान के समरकंद में सितंबर 2022 में हुई शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के बाद मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि यूक्रेन का उपयोग कर पश्चिमी देश रूस के विरुद्ध षडयंत्र कर रहे हैं, जिसे विफल करने के लिए यह कदम उठाया गया है। इसका लक्ष्य यूक्रेन का विसैन्यीकरण करना और यूक्रेन को नाटो का सदस्य बनने से रोकना है। इसके साथ ही, यूक्रेन के पूर्वी डोनबास क्षेत्र को यूक्रेनी शासन के अत्याचार से मुक्ति दिलाना भी इसका एक उद्देश्य है।

पुतिन अच्छी तरह जानते हैं कि जेलेंस्की अमेरिका, नाटो और यूरोपीय संघ के कुछ देशों के बल पर ही रूस से पंगा ले रहे हैं। पुतिन इसे सह नहीं पा रहे हैं। हमले के समय उन्होंने सोचा था कि यूक्रेन जल्दी ही उनकी बात मान जाएगा, पर ज्यों-ज्यों युद्ध लंबा होता गया, उन्हें समझ में आ गया कि युद्ध में प्रच्छन्न रूप से अमेरिका शामिल है। उसके द्वारा गुरिल्ला युद्ध चलाया जा रहा है। वह नाटो देशों के साथ मिलकर यूक्रेन की सेना को विभिन्न प्रकार के अत्याधुनिक हथियार दे रहा है, जिसके बल पर यूक्रेन युद्ध में डटा हुआ है। पश्चिमी देशों के सामरिक-आर्थिक सहयोग के कारण ही वह न केवल घुटने टेकने को तैयार नहीं है, बल्कि हालिया समय में रूस के सैनिकों को कई बार पीछे हटने के लिए भी बाध्य किया है।

समय-समय पर यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर के वक्तव्य भी इस बात को प्रमाणित करते हैं। उनको लगता है कि वे पश्चिमी देशों के बल पर रूस को पराजित करने में सफल रहेंगे। पर इस संबंध में यूक्रेन की राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा परिषद के सचिव ओलेक्सी डैनिलोव के विचार भिन्न हैं। उनका कहना है कि 'हमें उत्साह से बचना चाहिए। हमारी भूमि को मुक्त कराने के लिए अभी बहुत काम किया जाना है, और रूस के पास बड़ी संख्या में हथियार हैं।'

पुतिन वर्तमान घटनाक्रमों से थोड़े चिंतित जरूर हैं, जो 21 सितंबर 2022 को अपने देश को किए गए संबोधन से प्रकट होती है। पर उनके संकल्पों में एक दृढ़ता

साफ झलकती है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि 'जब तक रूस की क्षेत्रीय अखंडता को खतरा रहेगा, वे निश्चित रूप से अपने देश और जनता की रक्षा के लिए सभी साधनों का उपयोग करेंगे। और यह कोई झांसा नहीं है।' उनका सीधा संकेत परमाणु हथियारों के प्रयोग से है।

पुतिन की इस घोषणा से अमेरिका सहित पूरी दुनिया सकते में है। यदि ऐसा हुआ तो युद्ध मानवता के लिए महाविनाशकारी हो साबित हो सकता है। अमेरिका ने इसपर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उसके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलीवन ने रूस को चेतावनी दी है कि यदि वह परमाणु हथियार का प्रयोग करता है तो अमेरिका युद्ध में निर्णायक ढंग से हस्तक्षेप करेगा।

रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोवा ने भी वाशिंगटन को चेतावनी दी है कि वह यूक्रेन को यदि घातक हथियार की आपूर्ति करता है तो माना जाएगा कि वह एक लाल रेखा को पार कर रहा है और युद्ध में सीधे प्रतिपक्ष की भूमिका निभा रहा है, जिसके विरुद्ध रूस भी कार्रवाई करने से नहीं हिचकेगा।

युद्ध ने पूरी दुनिया को दो खेमों में बांट दिया है- रूस विरोधी और रूस समर्थक। एक वर्ग तटस्थों का है, जो युद्ध को बंद कराना चाहते हैं, पर किसी पक्ष में नहीं हैं। अभी हाल ही में रूस प्रेम को दर्शाते हुए बुल्गारिया में एक रैली निकाली गई और रशियन राष्ट्रपति के समर्थन में झंडे लहराए गए। खुद रूस में युद्ध-समर्थक और युद्ध-विरोधी वर्ग बन गए हैं। यह भी देखने को मिला है कि रूस-यूक्रेन जंग से रूसी नागरिक अब परेशान हो गए हैं। दूसरी ओर, सेना में नए युवाओं की भर्ती को लेकर देश में काफी दहशत है। लोग देश छोड़कर भाग रहे हैं। हालांकि रूस के सरकारी प्रवक्ता डिमित्री पेस्कोव ने इन खबरों को झूठा और भ्रामक बताया है। पर रूस के एक स्थानीय निगरानी समूह के 21 सितंबर, 2022 की रिपोर्ट के अनुसार रूस में इस युद्ध के विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन शुरू हो गया है, जिसमें हजारों प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

इसी बीच, रशियन न्यूज एजेंसी तास की एक रिपोर्ट आई है जिसके अनुसार रूसी संसद के निचले सदन ड्यूमा में एक ड्राफ्ट कानून बनाकर रूस के कब्जा वाले यूक्रेनियन प्रांतों को औपचारिक रूप से रूस में मिला लेने पर विचार किया

जा सकता है। इसके लिए यूक्रेन के विभिन्न इलाकों में जनमत संग्रह कराया जा रहा है। रूस के सैनिक घर-घर जाकर लोगों से मतदान करवा रहे हैं। यूक्रेन और अमेरिका-नाटो देश भले ही इस पूरी प्रक्रिया को 'फार्स' कह लें, पर रूस अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

अमेरिका और उसके सहयोगी राष्ट्र रूस को दबाने के लिए भले ही प्रतिबंधों की झड़ी लगा चुके हैं, और उसे झुकाने की कोशिश कर रहे हैं, पर इससे रूस झुकने को तैयार नहीं है। उसे नुकसान तो हो रहा है, पर उसकी तुलना में फायदा ज्यादा हो रहा है। अमेरिका एवं अन्य देश अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पा रहे हैं। रूस के निर्यात घटने के बजाय बढ़ गए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, रूस को तेल एवं गैस के निर्यात से इस साल 38 प्रतिशत अधिक लाभ हुआ है।

युद्ध को रोकने के लिए प्रारंभ में कई देशों ने रूस-यूक्रेन के बीच समझौते की पहल की थी। पर सफलता नहीं मिली। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एससीओ की बैठक में राष्ट्रपति पुतिन से युद्ध को रोकने और संवाद तथा कूटनीति के माध्यम से विवादों को सुलझाने का आह्वान किया है। फिर भारत, ब्राजील तथा दक्षिणी अफ्रीका के 10वें आईबीएसए त्रिपक्षीय मंत्रिस्तरीय आयोग की बैठक में भी युद्ध को शीघ्र खत्म करने के लिए आह्वान किया गया है। पर युद्ध जारी है।

इस पुस्तक में रूस और यूक्रेन के हजारों वर्षों की साझी विरासत एवं इतिहास पर ब्योरेवार चर्चा के आलोक में यूक्रेन पर रूसी हमले के कारणों एवं अन्य संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही युद्ध के परिप्रेक्ष्य में दुनिया में चल रहे विभिन्न नैरेटिवों और अमेरिका तथा पश्चिमी नाटो देशों की भूमिका को भी उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ प्रिय बंधु मृत्युंजय श्रीवास्तव का, जिनके कहने पर ही यह पुस्तक लिखी गई है। मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ श्रीमती मंजु श्रीवास्तव का, जिन्होंने पुस्तक का प्रूफ संशोधन का कष्ट मेरे लिए उठाया है। मानव प्रकाशन के श्री अनुज कुमार ने पुस्तक के प्रकाशन का जो गुरुतर कार्य किया है, इसके लिए उन्हें साधुवाद देता हूँ।

—अवधेश प्रसाद सिंह

अनुक्रमणिका

आमुख	5
रूस-यूक्रेन युद्ध का कारण	13
रूसी आन की पुनर्प्रतिष्ठा	21
नाटो के प्रति रूस की खीझ	27
विश्व में फैलता नैरेटिव	33
यूक्रेनी स्वत्व के लिए संघर्ष	39
स्वतंत्रता के बाद का यूक्रेन	45
रूसी आक्रमण के खिलाफ विश्व जनमत	51
भारत सहित विश्व पर युद्ध का असर	58
रूस-यूक्रेन की साझी विरासत	65
रूस-यूक्रेन पर जारों का शासन	71
रूस में क्रांति की शुरुआत	77
बोल्शेविक क्रांति	83
सोवियत संघ का निर्माण	91
सोवियत संघ का विघटन	97
दस्तावेज	103
बेचैन करते प्रश्न और संभावनाएँ	112